भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं

खुज्जुत्तरा एवं सामावती तथा उत्तरानन्दमाता

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं

खुज्जुत्तरा एवं सामावती

तथा

उत्तरानन्दमाता

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

****

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं उपासिकानं -

बहुस्सुतानं यदिदं खुज्जुत्तरा।

मेत्ताविहारीनं यदिदं सामावती।

झायीनं यदिदं उत्तरानन्दमाता।"

"भिक्षुओ, मेरी उपासिका श्राविकाओं में ये अग्र हैं -

बहुश्रुतों में अग्र खुज्जुत्तरा।

मैत्रीविहार (=भावना) करने वालियों में अग्र सामावती।

ध्यानियों में अग्र उत्तरानन्दमाता।"

–अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२६०-२६२)

****

भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

खुज्जुत्तरा एवं सामावती १

महाराजा उदेन १
सामावती २
वासुलदत्ता ४
मागण्डिया ५
जागी श्रद्धा बलवती ८
बहुश्रुत खुज्जुत्तरा १०
गालियों की बौछार १३
मागण्डिया द्वारा षड्यंत्र १५
दान का सदुपयोग १७
सामावती प्रमुख पांच सौ स्त्रियों की शरीर-च्युति . . १९
कर्मफल २०
मागण्डिया को मृत्यु-दंड २०
सामावती तथा अन्य स्त्रियों का पूर्व दुष्कर्म . . . २१
खुज्जुत्तरा का अतीत कर्म २२
अग्रस्थान की धर्मकामना २४

उत्तरानन्दमाता २५

मंगल हुआ प्रभात २५
श्रद्धाबीज की फसल २६
पुण्ण का पुण्य २६
उत्तरा का विवाह २७
उपोसथ व्रत २७
मैत्री-भावना २८
अक्रोध से क्रोध को जीते २९

भव-संसरण ३०

विपश्यना साहित्य **३१**

विपश्यना साधना के केंद्र **३४**

प्रकाशकीय

कोसम्बी के राजा उदेन की तीन रानियां थीं - सामावती, वासुलदत्ता तथा मागण्डिया। रानी सामावती तथा उसकी पांच सौ सहेलियां बुद्ध, धर्म तथा संघ के प्रति अति श्रद्धालु थीं।

मागण्डिया रूपगर्विता थी। महाराजा उदेन को मागण्डिया को सौंपने के पूर्व उसके माता-पिता ने उसके विवाह का प्रस्ताव भगवान गोतम बुद्ध के समक्ष रखते हुए कहा था - "महाश्रमण! मेरी इस रूपवती कन्या को स्वीकार करें। यह सर्वथा आपके योग्य है और आप इसके योग्य हैं। इसके साथ सुखी गृहस्थ-जीवन बिताइए।"

भगवान ने ब्राह्मण मागण्डिय से कहा - "ब्राह्मण, मैं अर्हंत हूं। सम्यकसंबुद्ध हूं। संबोधि प्राप्त करते हुए बोधिवृक्ष के तले जब मार मुझे साधनाच्युत करने में असफल रहा, तब मुझे लुभाने के लिए उसकी तीन सुंदरी पुत्रियां आयीं। उन परम मोहिनी देवकन्याओं के प्रति भी मेरे मन में रंचमात्र वासना नहीं जागी। यह तो मल-मूत्र से भरा हुआ मानवी शरीर है। मैं इसे पांव से भी नहीं छूऊंगा। ब्राह्मण! मैं समस्त वासनाओं से सर्वथा मुक्त हो चुका हूं।"

मागण्डिया को अपने रूप का बड़ा अभिमान था। भगवान का यह कथन कि 'उसका शरीर मल-मूत्र से भरा है, अतः उसे पांव से भी नहीं छूएंगे', उसके हृदय पर बिच्छू के डंक-सा लगा। वह जीवनभर के लिए भगवान का दुश्मन बन बैठी।

महारानी सामावती की खुज्जुत्तरा नाम की क्रीत-दासी थी। वह प्रतिदिन महारानी के लिए बाजार से फूल खरीदने जाती। फूल खरीदने के लिए प्राप्त आठ मुद्राओं में से चार के वह फूल खरीदती तथा शेष चार अपने पास रख लेती। कोसम्बी के सेठों के आवाहन पर भगवान भिक्षुसंघ-सहित कोसम्बी आये। सुमन माली के यहां भगवान भिक्षुसंघ-सहित भोजन के लिए पधारे। उस अवसर पर खुज्जुत्तरा ने भी भगवान का उपदेश सुना। सुनते-सुनते ही उदय-व्यय और निरोध का साक्षात्कार कर सोतापत्ति फल

प्राप्त कर लिया। उसने भगवान की शिक्षा को जीवन में अपनाया। चोरी तथा मृषावाद से विरत रहने लगी। खुज्जुत्तरा ने अपने अंदर आये परिवर्तन की वास्तविकता महारानी सामावती को बतलायी। सामावती ने खुज्जुत्तरा के मुँह से भगवान का उपदेश सुना। वह बहुत प्रभावित हुई। महारानी सामावती तथा उसकी सहेलियां सोतापत्ति अवस्था को प्राप्त हुईं। रानी सामावती ने खुज्जुत्तरा को दासी के बंधन से मुक्त किया और अपनी सगी मां की भांति पूज्य मानने लगी; खुज्जुत्तरा ने उसे सद्धर्म में नया जन्म जो दिया था। खुज्जुत्तरा भगवान की प्रमुख गृहस्थ शिष्याओं में से एक हुई। भगवान ने खुज्जुत्तरा को अपनी बहुश्रुत उपासिकाओं में अग्र स्थान दिया।

मागण्डिया को जब कोसम्बी में भगवान के आने की सूचना मिली तो उसे नहीं सुहाया। जब उसे पता चला कि उसकी सौत सामावती और उसकी ५०० सहेलियां भगवान की अनन्य उपासिकाएं बन गयी हैं, तब तो उसे यह असह्य हो गया। उसने नगर के गुंडों को धन देकर भगवान बुद्ध के पीछे लगाया तथा उन पर गालियों की बौछार करवायी जिससे कि वे अपने भिक्षुसंघ-सहित किसी अन्य नगर में चले जायं। भगवान की सहिष्णुता, धैर्य और समता के फलस्वरूप सप्ताह भर में गालियां बंद हो गयीं। मागण्डिया का प्रयोग असफल रहा।

तब उसने अपना गुस्सा भगवान की उपासिका रानी सामावती और उसकी सहेलियों पर निकाला। उसने रानी सामावती तथा उसकी सहेलियों के प्रति अनेक षड्यंत्र रचे। हर बार अपने को असफल जान अंततः उसने उन सभी को एक बड़े कक्ष में बंद करवा कर आग लगवा दी। वे सभी मैत्री-भावना को भावित करते हुए सद्गति को प्राप्त हुईं। भगवान ने रानी सामावती को मैत्री-विहार करने वाली उपासिकाओं में अग्र स्थान दिया।

जब राजा उदेन को सारी सच्चाई विदित हुई तब उसने मागण्डिया तथा उसके संबंधियों को निर्दयतापूर्वक मृत्युदंड की सजा दी।

भगवान ने भिक्षुओं की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए कहा - "भिक्षुओ! ये सांसारिक प्राणी संसार में विचरण करते हुए नित्य अप्रमत्त

रहकर पुण्यकर्म ही नहीं करते; अपितु कभी-कभी प्रमत्त होकर पापकर्म भी कर बैठते हैं। अतः इस सांसारिक भ्रमण में उन्हें कभी सुख का अनुभव करना पड़ता है तो कभी दुःख का।"

"सामावती तथा उसकी सहेलियों का आग में जलकर मृत्यु को प्राप्त होना, खुज्जुत्तरा का कुबड़ी होना, दासी होना, यह सब उनके पूर्व दुष्कर्मों का ही फल है।"

"भिक्षुओ! जो प्रमत्त हैं वे सौ वर्षों तक जीते हुए भी मरे हुए जैसे हैं। जो अप्रमत्त होते हैं, वे मरे हुए भी जीते हुए जैसे होते हैं। सामावती प्रमुख पांच सौ स्त्रियां मरी हुई भी जीती हुई जैसी हैं। भिक्षुओ! अप्रमत्त लोग नहीं मरते।"

****

उत्तरानन्दमाता बुद्ध, धर्म तथा संघ के प्रति अति श्रद्धालु थी। उसका विवाह राजगह के नगरश्रेष्ठी के पुत्र के साथ हुआ जो कि मिथ्यादृष्टिक था। वह त्रिरत्न के प्रति अश्रद्धालु था।

उत्तरा उपासिका सिरिमा नाम की गणिका को पति की सेवा में नियुक्त कर उपोसथ का पालन करने लगी। सिरिमा अपने को उस घर की गृहस्वामिनी मान बैठी। उसने ईर्ष्या के वशीभूत उत्तरा उपासिका के माथे पर खौलता हुआ घी डाल दिया। मैत्री-भावना में व्याप्त होने की वजह से उत्तरा के माथे पर गिराया गया खौलता हुआ घी कमल के पत्ते पर गिराये गये जल की तरह ढरक कर चला गया।

भगवान ने उत्तरानन्दमाता के मैत्रीपूर्ण कार्य का इस गाथा से अनुमोदन किया।

"अक्रोध से क्रोध को जीते, असाधु को साधु बन कर जीते, कृपण को दान से जीते और झूठ बोलने वाले को सत्य से।" भगवान ने उत्तरानन्दमाता को अपनी ध्यानी उपासिकाओं में अग्र स्थान दिया।

विपश्यना विशोधन विन्यास